International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 2, Mar-Apr, 2022, Impact Factor: 7.326

भारत – इजरायल संबंधों का बदलता स्वरूप

विजय पाल

रिसर्च स्कॉलर, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

सार संग्रह (Abstract):

भारत और इजरायल के संबंध दोनों देशों की आजादी के समय से ही उतार–चढ़ाव वाले रहे हैं। शुरुआत में भारत इजराइल को मान्यता देने में भी कतरा रहा था। क्योंकि भारत इजराइल को ब्रिटेन की तरह एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में देखता था। जिस प्रकार ब्रिटेन ने भारत को अपना उपनिवेश बनाया था। उसी प्रकार इजरायल भी फिलिस्तीन को धीरे – धीरे अपने कब्जे में ले रहा था। यरूशलम को भी अपने नियंत्रण में लेना इजरायल की इसी नीति को दर्शाता है। इसी प्रकार वे अरब देश जिनसे इजरायल की लड़ाई चल रही थी। उन देशों को भी भारत नाराज नहीं करना चाहता था। क्योंकि कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस जैसे संसाधनों के लिए भारत सबसे ज्यादा इन्हीं देशों पर निर्भर है। इसलिए इजरायल से अपने अच्छे संबंध स्थापित करके भारत इन देशों को नाराज नहीं करना चाहता था। 1991 में विश्व का राजनीतिक परिदृश्य पूरी तरह बदल गया। क्योंकि 1991 से पहले पूरा विश्व दो गुटों में बैठा हुआ था पूंजीवादी गुट जिसका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था और साम्यवादी गुट जिसका नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। इसी प्रकार एशिया और अफ्रीका के वह देश जोकि साम्राज्यवाद के चंगुल से आजाद हुए थे। वे गुटनिरपेक्षता का समर्थन कर रहे थे। भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का सहजन्मदाता होते हुए भी सोवियत संघ का समर्थन करता था। अमेरिका की पूंजीवादी विचारधारा को लेकर उदासीन होने के कारण भी भारत इजराइल से अच्छे संबंध नहीं बना पाया। क्योंकि इजरायल और अमेरिका के संबंध घनिष्ठ थे। लेकिन जब 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया तो विश्व के परिदृश्य पर अमेरिका एक सर्वोच्च ताकत के रूप में विद्यमान हो गया। उन स्थितियों में भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ा। भारत की विदेश नीति का झुकाव अब अमेरिका की तरफ हो गया। भारत ने भी उदारीकरण की व्यवस्था को अपना लिया। उन परिस्थितियों में 1991 के बाद भारत के इजरायल से संबंध अच्छे होने लगे। भारत और इजरायल के बीच में जितने भी अच्छे संबंधों की शुरुआत हुई है वे सारी शुरुआत 1991 के बाद हुई है। 1991 में हमारे देश के प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव बने थे जोकि 1996 तक अपने पद पर रहे। उनके समय से ही भारत और इजरायल के संबंधों में सुधार हुआ। उसके उपरांत भारतीय जनता पार्टी की सरकार जो कि 1996, 1998 और 1999 से 2004 के बीच में रही थी। इन सरकारों के समय में भी भारत और इजरायल के संबंध मजबूत होते गए। इजराइल के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने भी भारत का दौरा किया तथा अनेक संधियों और समझौतों पर हस्ताक्षर किए। भारत ने इजरायल के साथ रक्षा के क्षेत्र में और कृषि के क्षेत्र में बहुत समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इजरायल से भारत में अनेक तकनीकों का आदान प्रदान हुआ। फिलिस्तीन को लेकर भारत की जो नीति बनी थी। वह भी अब पूर्ण रूप से बदल चुकी है। भारत के साथ–साथ इजरायल की सरकार भी भारत के साथ अच्छे संबंध बनाने में सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ती जा रही है।

उद्देश्य:

1. 1991 से पहले भारत और इजरायल के बीच के संबंधों की व्याख्या करना।

2. 1991 से लेकर वर्तमान समय तक इजराइल और भारत के बीच में बने संबंधों को बताना।

3. इजरायल और भारत के बीच में बने अच्छे संबंधों का कारण बताना।

प्रविधिः

द्वितीय स्त्रोतः द्वितीय स्त्रोत के रुप में भोध अध्ययन से संबंधित ग्रंथों, पुस्तकों, समाचार–पत्रों, भोध–पत्रों, वेब पत्रिकाओं का अध्ययन कर विशय को वि लेशित करने का प्रयास किया गया है।

भारत – इजरायल संबंधों का बदलता स्वरूप

भारत – इजरायल संबंधों का इतिहासः

इजरायल 14 मई 1948 को एक स्वतंत्र राष्ट्र बना जबकि भारत को आजादी 15 अगस्त 1947 को मिली। भारत इजरायल संबंधों की शुरुआत 1992 से मानी जाती है और 2017 में भारत और इजरायल ने अपने संबंधों की शुरुआत के 25 साल पूरे किए है। लेकिन 1948 से लेकर 1992 के बीच में भारत और इजरायल के बीच में अच्छे संबंध नहीं थे। इसके पीछे बहुत सारे कारण विद्यमान थे। पहला कारण तो यह था कि भारत अरब देशों को नाराज नहीं करना चाहता था। क्योंकि अरब देशों से इजराइल के संबंध खराब थे। बहुत सारे अरब देश ऐसे थे। जिन्हें इजराइल का अस्तित्व पसंद नहीं था। इन देशों में मिस्र, जॉर्डन, सीरिया और सऊदी अरब के नाम मुख्य रूप से लिए जाते हैं। 1960 में इजराइल की इन देशों से लड़ाई भी हुई थी। धीरे धीरे इजराइल ने फिलिस्तीन के क्षेत्र पर कब्जा करना शुरू कर दिया। वहां पर मानव अधिकारों का उल्लंघन करना शुरू कर दिया। इसलिए अरब देश इजराइल से घृणा करते हैं। दूसरा भारत के लिए अरब देश बहुत महत्वपूर्ण है। शशि थरूर ने अपनी पुस्तक पैक्स इंडिका जोकि 2012 में लिखी गई थी[1]। उस पुस्तक में वे लिखते हैं कि 'अरब देशों का भारत के लिए बहुत महत्व है। इन देशों को खुश करने के लिए भारत ने इजराइल से अच्छे संबंध स्थापित नहीं किए'। भारत अरब देशों से 63 बिलियन कच्चे तेल का आयात करता है और 93 बिलियन का व्यापार भी भारत अरब देशों से करता है। भारत के बहुत सारे कर्मिक भी अरब देशों में काम करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत के पास बहुत सारे ऐसे कारण थे। जिसके कारण उसने अरब देशों से अपने संबंध खराब नहीं किए। अरब देशों से नजदीकियों के कारण भारत ने फिलिस्तीन का समर्थन भी करना शुरू कर दिया था। भारत गुटनिरपेक्ष का भी सदस्य था और भारत सोवियत संघ से भी अपने अच्छे संबंध बनाना चाहता था। यही कारण था कि इतने लंबे समय तक भारत और इजरायल के अच्छे संबंध बन नहीं पाए[2]।

भारत का फिलिस्तीन को समर्थन करने के बावजूद इजरायल भारत से नज़दीकियां बनाना चाहता था। क्योंकि इजराइल को लगा था कि भारत भविष्य में हथियारों का एक बहुत बड़ा आयात करने वाला देश बनने वाला है। इजरायल बहुत समय से सेना के उपकरणों का निर्माण कर रहा है। इसलिए फिलिस्तीन का समर्थन करने के बावजूद इजरायल भारत से आर्थिक संबंध बनाना चाहता था। लेकिन आरंभ में भारत ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को दिखाने के लिए इजरायल से औपचारिक संबंधों की भी शुरुआत नहीं की। सर्वप्रथम भारत ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मीटिंग में 1936 में फिलिस्तीन का समर्थन किया गया था और 27 सितंबर 1936 को भारत में फिलिस्तीन दिवस मनाया गया। उसके बाद 1939 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मेलन में एक प्रस्ताव पास किया गया। उस सम्मेलन में फिलिस्तीन को शुभकामनाएं भेजी गई और यह उम्मीद की गई कि आने वाले समय में फिलिस्तीन एक स्वतंत्र राष्ट्र बनेगा। उसके बाद भारत यूनाइटेड नेशन स्पेशल कमेटी ऑन फिलिस्तीन का सदस्य भी बना। उसके बाद 1974 में भारत पहला गैर अरब देश बना जिसने 'फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन' को मान्यता दी। उसके बाद 1980 में फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन को पूर्ण मान्यता दी और नई दिल्ली में उनका कार्यालय भी खुलवाया। उसके बाद फिलिस्तीन के नेता यासिर अराफात तीन दिन की यात्रा पर 1980 में भारत आए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने भारत को अपना एक आंतरिक मित्र बताया और इंदिरा गांधी को अपनी बहन भी बताया।

इंदिरा गांधी ने भी फिलिस्तीन को एक पत्र लिखा था। जिसमें उन्होंने यहूदियों की आलोचना की थी। उस पत्र में उन्होंने फिलिस्तीन के लोगों पर किए जाने वाले अत्याचार और उनकी जमीन हथियाने का जिक्र किया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि फिलिस्तीन को समर्थन करने का हमारा पुराना इतिहास रहा है। शशि थरूर ने अपनी पुस्तक मैक्स इंडिका में यह भी लिखा है कि 'जब इजराइल ने मई 1948 में अपनी स्वाधीनता घोषित की[3]। उस समय भारत ने उसे मान्यता देने से भी इनकार कर दिया था। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में इजराइल को देश बनाने के लिए हुए मतदान के विरोध में अपना मत दिया था। लेकिन 1950 में

भारत ने इजराइल को मान्यता दे दी'। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत और इजरायल के संबंधों के इतिहास में फिलिस्तीन की बहुत बड़ी भूमिका है। भारत के लिए सबसे बड़ी नकारात्मक बात यह है कि फिलिस्तीन के पक्ष में भारत ने बढ़ चढ़कर समर्थन किया था[3]। फिर 1992 ईस्वी में भारत ने अपनी पुरानी मान्यताओं को छोड़ते हुए इजराइल से संबंध स्थापित करने आरंभ कर दिए। 1992 ईस्वी में भारत के प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव ने इजराइल से कूटनीतिक संबंध स्थापित कर लिए। उसके उपरांत दोनों देशों ने अपने–अपने देशों में दूतावास भी स्थापित कर लिए।

भारत की नीति में अचानक आए इस बदलाव के पीछे कई कारण थे। एक तो 1991 ईस्वी में सोवियत संघ का विघटन हो गया था। सोवियत संघ के टूटने के बाद पूरे विश्व में नई भौगोलिक संबंध बनने आरंभ हो गए थे। 1991 से पहले पूरा विश्व दो गुटों में बंटा हुआ था। पूंजीवादी गुट का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था और दूसरा साम्यवादी गुट जिसका नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका पूरे विश्व की एक सर्वोच्च शक्ति बन चुका था। इन परिस्थितियों में भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ा। यह वह दौर था जब भारत एक आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा था। उस समय हमें हमारी आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए विश्व व्यापार संगठन के नियमों और शर्तों को स्वीकार करना पड़ा। उस समय अमेरिका ने भी भारत के सामने यह शर्त रखी थी कि यदि भारत अमेरिका के साथ अच्छे संबंध बनाना चाहता है तो उसे इजरायल के साथ भी अच्छे कूटनीतिक संबंध बनाने पड़ेंगे। बाद में इजराइल से हमारे संबंध काफी फायदेमंद साबित हुए। फिर 1998 में भारत में एनडीए गठबंधन को बहुमत मिला। उस सरकार के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने इजराइल से स्थापित संबंधों को आगे ले जाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई।

1998 से 2004 के बीच में एनडीए की सरकार ने इजराइल से अच्छे संबंध बनाने के सभी प्रयास किए[3]। फिर 2003 में एरियल शरोन इजरायल के पहले प्रधानमंत्री बने जिन्होने भारत की यात्रा की। उनकी यह यात्रा एक ऐतिहासिक यात्रा सिद्ध हुई। इजराइल ने भारत की रक्षा क्षेत्र में बहुत मदद की। रक्षा उपकरणों को लेकर भारत और इजराइल की नीति बहुत पुरानी है। इजराइल ने भारत की अन्य क्षेत्रों में भी मदद की है। जब 1998 में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया तो भारत को पूरी दुनिया का विरोध झेलना पड़ा। उसमें तीन देश ही ऐसे थे। जिन्होंने इस परमाणु परीक्षण का विरोध नहीं किया था। वे तीन देश थे – रूस, इजरायल और फ्रांस। इस प्रकार हम देखते हैं कि इजराइल ने 1992 के बाद भारत का कई क्षेत्रों में समर्थन करना आरंभ कर दिया था। इजराइल के राष्ट्रपति एजर विजमैन 1997 में पहली बार भारत में आए। उस समय इजरायली राष्ट्रपति ने भारत के साथ 'ब्राक्वीन मिसाइल' नाम के एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। भारत और इजरायल के बीच में यह पहला समझौता था[4]।

इसके अलावा भी भारत और इजरायल के बीच में कुछ छोटे समझौते भी हुए हैं जैसे कि इजराइल ने भारत के सैन्य उपकरणों को अपडेट भी किया है। भारत ने इजराइल से आईएएल रडार से लैस तीन फाल्कन ए. डब्ल्यू. ए. सी. एस. खरीदे। फिर 2003 में रूसी ए–76 परिवहन विमान पर लगे उपकरण खरीदे गए। जिनकी कीमत 1 बिलियन डॉलर है। जो कमांड और समन्वय क्षमताओं में भारत की प्रारंभिक चेतावनी को बहुत बढ़ा देता है। इसके बाद सितंबर 2016 में भारत सरकार ने फाल्कन और अवाक्स की खरीद को मंजूरी दी। भारत ने चार हेरोन टी पी ड्रोन इसराइल से लीज पर लिए हैं। जिसका मूल्य 200 मिलियन डॉलर है। जो भारत में अगस्त 8 दिसंबर 2021 को आए थे। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है पहले भी भारत ने इसराइल से हेरोन टीपी ड्रोन लिए है । इनका प्रयोग इसराइल ने 2008–2009 में गाजा में किया था[5]।

भारत – इजरायल संबंधों का बदलता स्वरूपः

इजरायल ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा मई 1948 में कर दी थी। 1950 तक भारत ने इजराइल को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता नहीं दी था। इसके साथ ही इजराइल को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता देने के भी भारत खिलाफ था। इसके पीछे कई कारण थे। एक तो भारत का 1947 में विभाजन हुआ था। इस कारण भारत का मुस्लिम समाज इजराइल को मान्यता देने का गलत मतलब निकाल सकता था। भारत ने इजराइल को 17 सितंबर 1950 को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी। हालांकि 1949 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में इजराइल के विरुद्ध मतदान किया था[6]। 1950 में मान्यता देने के बावजूद भारत ने इजराइल से

कूटनीतिक संबंध नहीं स्थापित किए। हालांकि कुछ क्षेत्रों में भारत और इजरायल ने सहयोग करना शुरू कर दिया था। हमारे अच्छे कूटनीतिक संबंध इजराइल से 1992 में स्थापित हुए। इससे पहले संबंध स्थापित ना होने का कारण फिलिस्तीन था। इस क्षेत्र को लेकर भारत इजराइल से कूटनीतिक संबंध बनाने में पीछे हटता रहा। इजराइल से अच्छे कूटनीतिक संबंध बनने के बाद भारत ने इजराइल से रक्षा तकनीक मंगवाने का समझौता किया। 1990 के बाद भारत ने इजराइल से मिसाइल खरीदनी शरू की। ये मिसाइलें अमेरिका में बनी हरपुन मिसाइल जो कि पाकिस्तान को दी गई थी का मुकाबला करने के लिए खरीदी गई थी। कृषि के क्षेत्र में भी इजरायल ने भारत की बहुत मदद की है। इजराइल में बहुत बड़ा क्षेत्र ऐसा है जो कि कृषि के लिए बारिश पर निर्भर है और बारिश उस क्षेत्र में समय पर नहीं आती है। इस क्षेत्र के लिए इजरायल ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जिसके अनुसार कम पानी में भी अच्छी खेती की जा सकती है। इस तकनीक का फायदा भी भारत ने लिया है।

भारत और इजरायल के बीच रक्षा संबंधः

इजरायल कृषि, साइबर सुरक्षा और अन्य क्षेत्र में भी भारत की मदद करता है। भारत और इजरायल अपनी खुफिया एजेंसियों 'मोसाद और रॉ' के बीच में खुफिया जानकारी साझा करते हैं। भारत और इज़राइल 'स्पाइक एंटी टैंक' और 'गाइडेड मिसाइल' के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के करीब हैं। जिसकी अनुमानित लागत 3200 करोड़ रुपये है। जब रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) की स्थापना रामेश्वर नाथ काओ द्वारा सितंबर1968 की गई थी। उस समय तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें सलाह दी थी कि उन्हें इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के साथ संबंध विकसित करने चाहिए। यह पाकिस्तान और चीन के बीच सैन्य संबंधों के प्रतिवाद के रूप में सुझाया गया था। इजराइल भी इस बात को लेकर चिंतित था कि पाकिस्तानी सेना के अधिकारी लीबियाई और ईरानियों को सेन्य प्रशिक्षण दे रहे थे[6]। न्यूयॉर्क टाइम्स अखबार ने अपनी इनवेस्टिगेशन रिपोर्ट के आधार पर दावा किया है कि भारत सरकार ने 2017 में इजरायल से लगभग 15,000 करोड़ रुपए की रक्षा डील के तहत जासूसी सॉफ्टवेयर पेगासस खरीदा था। इस रक्षा डील में कुछ मिसाइलों की खरीद भी की गई थी। आरोप है कि भारत में लगभग 40 पत्रकार, विपक्ष के बड़े नेताओं, कुछ केंद्रीय मंत्रियों, सुरक्षा एजेंसियों के पूर्व और वर्तमान प्रमुखों, कुछ विजनेसमैन सहित लगभग 300 भारतीयों के फोन हैक किए गए थे। इस प्रकार इजराइल से हुई इस खरीद का राहुल गांधी समेत अनेक नेताओं ने विरोध किया है। इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट और कुछ अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस साल भारत की यात्रा पर आ सकते हैं। यह जानकारी भारत में इजरायली राजदूत नाओर गिलोन ने दी। उन्होंने कहा कि दोनों देश 30 साल के राजनयिक संबंधों का जश्न मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि साल भर चलने वाले इस समारोह को रफ्तार देने के लिए एक विशेष प्रतीक चिन्ह बनाया जा रहा है।

सुझाव

1. इजराइल से बने अच्छे संबंधों का फायदा भारत कृषि क्षेत्र में भी उठा सकता है। क्योंकि इजराइल की तरह भारत में भी कुछ कृषि क्षेत्र ऐसा है जहां पर किसानों को सिंचाई के लिए बारिश पर निर्भर रहना पड़ता है।
2. सूचना और तकनीक के क्षेत्र में भी हम इजराइल से फायदा उठा सकते हैं।

संदर्भ स्त्रोत

1. फंफंर आल(2008) "इजरायल इंडिया रिले ांस स्ट्रांग बट लो की"पृश्ट24
2. हारेल अमोस (2005) "इजरायल इंडिया स्ट्रैटेजिक टाइज आर नो लोगंर ए सीक्रेट"पृश्ट19
3. इंडियन एंबेसी (14.07.2017) 'भारत के दूतावास तेल अवीव।
4. हिंदू (2017) 'इडिया अबस्ट्रेंस फ्रॉम यूएएन एच आर सी वोट अगेंस्ट इजरायल' पृश्ट 6
5. बासु निरसिंहमां (13.02.2015) 'इंडिया, इजरायल एफटीए नॉट लाइक्ली टूबी साइंड सून'। बिजनेस स्टैंडर्ड इंडिया पृश्ट 8
6. येनेट न्यूज (2017) 'फ्रॉम इंडिया विद लव'। पृश्ट 7